Year-8; Sept. 2017
ISSN–2231-1130
UGC Sr. No. – 48398
VEETHIKA

''शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् अध्यापकों की शिक्षण अभिक्षमता एवं व्यवसाय सन्तोष का तुलनात्मक अध्ययन''

डॉ0 इन्द्रसेन सिंह*

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है, इसके द्वारा मुनष्य की मूल प्रवृत्तियों तथा जन्मजात शक्तियों का विकास इसके ज्ञान और कला कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है, और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। यह कार्य मनुष्य के जन्म से ही प्रारम्भ हो जाता है।

जॉन लॉक महोदय– ''जिस प्रकार पौधे का विकास कृषि द्वारा होता है, उसी प्रकार बालक का विकास शिक्षा द्वारा होता है।''

शिक्षा की सम्पूर्ण प्रक्रिया मुख्यतः उनके प्रमुख अंगो पर निर्भर करती है। शिक्षक शिक्षण प्रणाली का सबसे महत्वपूर्ण अंग होता है। शिक्षक ही शिक्षा का केन्द्र बिन्दु अर्थात कर्ता माना जाता है। बालक को शिक्षक के निर्देशन की आवश्यकता अन्य स्तरों की अपेक्षा प्राथमिक स्तर पर अधिक होती है। यदि हम अपनी शिक्षा प्रणाली को प्रभावी ढंग से सम्पादित करना चाहते हैं तो यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम शिक्षक की मनोवृत्ति, शैक्षिक स्तर, बौद्धिक क्षमता, कार्य करने के ढंग, विचारों की कुशलता एवं शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति, शिक्षण अभिक्षमता एवं उनके व्यवसाय सन्तोष पर विशेष ध्यान दें। क्योंकि अध्यापक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का प्रभाव बालक पर सकारात्मक रूप से पड़ता है।

इस सम्बन्ध में डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा है– '' अध्यापक का समाज में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है, यह पीढ़ी दर पीढ़ी बौद्धिक परम्पराओं का हस्तान्तरण करता है, प्राविधिक कुशलता बनायें रखता है और सभ्यता के दीप को आलोकित करता है, यह केवल व्यक्ति को रास्ता ही नहीं दिखाता बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र को दिशा बोध देता है।''

सम्पूर्ण शिक्षा की प्रक्रिया की धुरी शिक्षक को ही माना गया है शिक्षक के निर्देशन एवं ज्ञान देने के अभाव में सम्पूर्ण समाज एवं व्यक्ति ज्ञानार्जन को सही दिशा का अनुसरण नहीं कर सकते हैं। शिक्षक अपने सकारात्मक मूल्यों के आधार पर ही अपने व्यवसाय को निर्धारित कर सकता है तथा समाज में श्रेष्ठ नागरिक की ख्याति पाने में सफल हो सकता है क्योंकि प्रत्येक व्यवसाय का अपना दर्शन होता है और सम्बन्धित व्यवसायी उस दर्शन को ध्यान में रखते हुए, कार्य में सतुष्ट होना चाहता है तभी व्यावसायिक संतुष्टि देखी जा सकती है।

उपरोक्त विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका है। समाज की उन्नति, बालकों के व्यक्तित्व का विकास एवं शिक्षा प्रणाली के समुचित क्रियान्वयन में शिक्षक के व्यक्तित्व के गुण प्रभाव डालते हैं। शिक्षा का प्राथमिक स्तर एक बुनियादी स्तर के रूप में कार्य करता है यह एक आधारशिला प्रदान करता है।

उद्देश्य –

प्रस्तुत शोध पत्र के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. शहरी तथा ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् अध्यापकों की शिक्षण अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शहरी तथा ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् अध्यापकों का व्यवसाय सन्तोष का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पनाएँ :

1. शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् अध्यापकों की शिक्षण अभिक्षमता में कोई अन्तर नहीं होगा।
2. शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् अध्यापकों के व्यवसाय सन्तोष में कोई अन्तर नहीं होगा।

शोध विधि :

वर्तमान शोध अध्ययन हेतु शोध कर्ता द्वारा

* ग्राम–मोहली, पोस्ट–बकचुना जिला–फैजाबाद।

वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

उपकरण :

1. शिक्षण अभिक्षमता– डॉ0 आर0 पी0 सिंह एवं डॉ0 एस0 एन0 शर्मा
2. व्यवयास सन्तोष– डॉ0 (श्रीमती) मीरा दीक्षित

न्यादर्श :

शोध अध्ययन हेतु कानपुर जिले के परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों के 200 शहरी अध्यापक एवं 200 ग्रामीण अध्यापक यादृच्छिक विधि द्वारा लिए गये हैं।

सांख्यिकीय गणना :

परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी0 परीक्षण नामक सांख्यकीय विधियों को प्रयोग में लिया गया है।

परिणाम :

तालिका सं0– 01

शहरी अध्यापक तथा ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् अध्यापकों की शिक्षण अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन–

क्र सं	क्षेत्र	संख्या N	प्राप्तांको का योग X	मध्यमान M	मानक विचलन SD	टी पीरक्षण मान	सार्थ–कता
1-	शहरी अध्यापक	200	15940	79-70	14-06	1-15	N.S.
2-	ग्रामीण अध्यापक	200	15640	78-20	11-88		

तालिका सं0–01 से स्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्रां के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् अध्यापकों का शिक्षण अभिक्षमता (TATB) परीक्षण करने पर उनके प्राप्तांकों का मध्यमान 79.70 एवंम मानक विचलन 14.06 ज्ञात हुआ तथा ग्रामीण क्षेत्रों के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् अध्यापकों का (TATB) परीक्षण करने पर उनके प्राप्तांको का मध्यमान 78.20 एवं मानक विचलन 11.88 ज्ञात हुआ। दोनों के मानो से सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए टी–परीक्षण मान 1.15 ज्ञात किया जो कि . 01 एवं .05 स्तर पर सार्थकता सारणी देखने से ज्ञात होता है कि यह मान 1.97 एवं 2.59 से कम है अतः यह दोनो स्तरों पर सार्थक नहीं है।

अतः परिक्पना सं0 01 '' शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयां में शिक्षणरत् अध्यापकों का शिक्षण अभिक्षमता में कोई अन्तर नहीं होगा''– स्वीकृत की जाती हैं।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षारत् अध्यापका की शिक्षण अभिक्षमता परीक्षण करने पर उनके प्राप्तांकों के मध्यमानों में अन्तर पाया गया किन्तु टी–परीक्षण करने पर उनमें कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः कहा जा सकता है कि अध्यापकों की अभिक्षमता पर परिवेश का प्रभाव अपेक्षाकृत कम पड़ता है, अध्यापक चाहे ग्रामीण परिवेश का हो या शहरी उसकी शिक्षण अभिक्षमता उसके अन्तर्निहित वैयक्तिक गुणों तथा शैक्षिक गुणों से अधिक प्रभावित होती है।

तालिका सं0– 02

शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् अध्यापकों के व्यवसाय सन्तोष का तुलनात्मक अध्ययन–

क्र0 सं0	क्षेत्र	संख्या छ	प्राप्तांको का योग X	मध्यमान M	मानक विचलन SD	टी पीरक्षण मान	सार्थकता
1-	शहरी अध्यापक	200	39330	199-65	18-24	0-83	N.S.
2-	ग्रामीण अध्यापक	200	38940	194-70	27-62		

तालिका सं0–02 से स्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्रां के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् अध्यापकों का व्यवसाय सन्तोष DJSS परीक्षण करने पर उनके प्राप्तांकों का मध्यमान 196.65 एवं मानक विचलन 18.24 ज्ञात हुआ था तथा ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् अध्यापकों का DJSS परीक्षण करने पर उनके प्राप्तांको का मध्यमान 194.70 एवं मानक विचलन 27.62 ज्ञात हुआ। दोनों के मानो से सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए टी–परीक्षण मान 0.83 प्राप्त किया जोकि . 01 एवं .05 स्तरों पर सार्थकता सारणी देखने से ज्ञात होता है कि यह मान 1.97 एवं 2.59 से कम है अतः यह दोनो स्तरों पर सार्थक नहीं है।

अतः परिक्पना सं0 02 ''शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयां में शिक्षणरत् अध्यापकों

के व्यवसाय सन्तोष में कोई अन्तर नहीं होगा''– स्वीकृत की जाती हैं।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षारत् अध्यापकों का व्यवसाय सन्तोष परीक्षण करने पर उनके प्राप्तांकों के मध्यमानों में अन्तर पाया गया किन्तु टी–परीक्षण ज्ञात करने पर उनमें कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः कहा जा सकता है कि अध्यापकों में सन्तोष के सन्दर्भ में कोई अन्तर नहीं है। दोनों क्षेत्रों के अध्यापकों के व्यवसाय सन्तोष में जो अन्तर है वह सार्थक नहीं है क्योंकि प्राथमिक ग्रामीण/शहरी परिषदीय विद्यालयों की दशाओं– वेतन, भौतिक सुविधाओं, शिक्षण कार्य आदि में कोई विशेष अन्तर नहीं होता है। दोनों क्षेत्रों के अध्यापकों के मूल में अध्यापन के प्रति दृष्टिकोण तथा उससे उत्पन्न परिस्थिति को देखने का दृष्टिकोण शिक्षकत्व से प्रभावित है, तथा उन सभी में व्यवसाय सन्तोष लगभग समान रूप से व्याप्त है।

निष्कर्ष :

1. ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् अध्यापकों की शिक्षण अभिक्षमता में और शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् अध्यापकों की शिक्षण अभिक्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
2. ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् अध्यापकों के व्यवसाय सन्तोष में और शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् अध्यापकों के व्यवसाय सन्तोष में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सन्दर्भ –

1. अन्नामलाई, ए.आर0 (2000) एटीट्यूड ऑफ टीचर्स ट्वड्र्स टीचिंग, एक्सपेरिमेन्ट्स इन रिसर्च XXI-VIII (3)
2. सुपर, डी.ई. (1939) आक्यूपेशनल लेवल एण्ड जाब सटिस्फेक्शन, जनरल ऑफ अप्लाइड साइकोलाजी, वॉ0 23(5), अक्टू. 1939, 547–564
3. भोसले, आर.ए. (2006) 'अ स्टडी ऑफ कोरिलेशन बिट्वीन टीचर्स
4. एटीट्यूड एण्ड परफाइर्मेन्स ऑफ रुरल इन सर्विस प्राइमरी स्कूल टीचर्स' जनरल आफ आल इंडिया एसोसिएशन फॉर एजूकेशनल रिसर्च, 18(1, 2), 42–43
5. फ्लोरेस, एम.ए. (2001) 'पर्सन एण्ड कान्टेक्स्ट इन बिकमिंग अ न्यू टीचर' जरनल ऑफ एजूकेशन फार टीचिंग 27(2)
6. डेविस, आर (1984) अ साइकोलाजिकल थ्योरी ऑफ वर्क एडजस्टमेंट, यूनिवर्सिटी आफ मिनीसोटा प्रेस
7. अल. अजमी, आर. (2006), द इफेक्ट आफ जेन्डर आन जाब सटिस्फेक्शन एण्ड आर्गेनाइजेशनल कमिटमेंट इन कुर्वेत, इंटरनेशनल जनरल ऑफ मैनेजमेण्ट, 23(4) 838, 844